बच्चों को क्या करना है। पहले2 शान्तिधाम जाना है इसलिये बाप को याद करना है तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें टाईम इतना ही लगता है जितना टाईम बाप यहां रहते हैं। ऐसे भी नहीं कहेंगे बाप शान्तिधाम में गोल्डेन एज में हैं। नहीं। वह तो गोल्डेन एज में पार्ट लेते ही नहीं। तो आत्मा को गोल्डेन एजेड नहीं कहेंगे। आत्मा को जब शरीर मिलता है तब कहा जाता है यह गोल्डेनएजेड जीवात्मा है। ऐसे नहीं कहेंगे गोल्डेनएजेड आत्मा। नहीं। गोल्डेनएजेड जीवात्मा फिर सिल्वर एजेड जीवात्मा होती है। तो यहां तुम बैठते होतुमको शान्ति भी सुख भी प्राप्त होती है। तो क्या करना चाहिए। दुःखधाम का सन्यास। इनको कहा जाता है बेहद का सन्यास। उन निवृति मार्ग वाले सन्यासियों का है हद का सन्यास। घर-बार छोड़ जंगल जाते हैं। उनको यह पता नहीं है कि सारी सृष्टि ही जंगल है। यह है कांटों का जंगल। यह कांटों की दुनिया है। वह है फूलों की दुनिया। वह भल सन्यास करते हैं परन्तु फिर भी कांटे के की दुनिया में जंगल में ही शहर से दूर-दूर जाकर रहते हैं। उनकी है ही निवृति मार्ग का धर्म। तुम्हारा है प्रवृति मार्ग। तुम पवित्र जोड़ी थे। अभी अपवित्र बने हो। उनको गृहस्थ आश्रम भी कहते हैं। सन्यासी तो आते ही हैं बाद में। क्रिश्चन कुछ पहले आते हैं। तो यह झाड़ भी याद करना है चक्र भी याद करना है। बाप कल्प2 आकर कल्पवृक्ष की नालेज देते हैं। क्योंकि खुद बीजरूप है। सत है चैतन्य है। इसलिये कल्पवृक्ष का सारा राज समझाते हैं। तुम आत्मा तो हो परन्तु तुमको ज्ञान का सागर सुख का सागर, शान्ति का सागर नहीं कहा जाता। यह महिमा एक बाप की ही है। जो तुमको ऐसा बनाते हैं। बाप की यही महिमा सदैव के लिये है। वह सदैव पवित्र है। और सदैव निराकार ही है। सिर्फ थोड़े समय के लिये आते हैं पावनबनाने। सर्वव्यापी की बात तो है नहीं। तुम जानते हो बाप सदैव वहां रहते हैं। भक्ति मार्ग में सदैव उनको याद करते हैं। सतयुग में तो याद करने की दरकार नहीं रहती। रावण राज्य में तुम्हारा चिल्लाना शुरु होता है। वही बाप आकर सुख शान्ति देते हैं। तो फिर जरूर अशान्ति में उनकी याद आती है। बाप समझाते हैं हर 5000 वर्ष बाद मैं आता हूं। आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुःख। आधा कल्प बाद ही रावण राज्य शुरु होता है। इसमें पहला नम्बर भूल है देह-अभिमान। इसके बाद ही फिर और विकर्म आते हैं। अभी बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो। देहीअभिमानी बनो। आत्मा की ही पहचान नहीं है। मनुष्य तो सिर्फ कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है। अभी तुम समझते हो वह है अकालमूर्त। इस अकालमूर्त आत्मा का तख्त यह शरीर है। आत्मा बैठती भी भृकुटि में है। अकालमूर्त का यह तख्त है। वह तख्त नहीं जो अमृतसर में लकड़ी का गाया जाता है। वह अकालतख्त तो झूठा है। बाप ने समझाया है जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी अकाल तख्त हैं। अकालमूर्त का यह तख्त है। जो आत्मा आकर यहां विराजमान होती है। सतयुग है या कलियुग है, आत्मा का तख्त है ही यह मनुष्य शरीर। तो कितने अकालतख्त हैं। जो भी मनुष्य मात्र हैं अकाल आत्माओं के तख्त हैं। आत्मा एक तख्त छोड़ झट दूसरा तख्त भरती है। पहले छोटा तख्त होता है फिर बड़ा होता है। यह शरीर भी तख्त बड़ा छोटा होता है। वहलकड़ी का तख्त जिसको सिक्ख लोग अकालतख्त कहते वह तो छोटा बड़ा नहीं होता। यह किसको भी पता नहीं है कि सभी मनुष्य मात्र अकाल तख्त हैं आत्मा अ है। कब विनाश नहीं होता। आत्मा को तख्त भिन्न2 मिलती है। सतयुग में तुमको बड़ा फर्स्ट क्लास तख्त मिलत है। उनको कहेंगे गोल्डेनएजे ड तख्त। तुम रहते ही हो गोल्डेन एज में। फिर उस आत्मा को सिलवर एजेड, कापर एजेड आयरनएजेड तख्त मिलता है। फिर गोल्डेनएजेड तख्त चाहिए। सो तो पवित्र बनना पड़े। इसलिये बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे खाद निकल जावेंगा। तुमको फिर ऐसा देवर तख्त मिलेंगा। अभी तुम ब्रा कुल के तख्त पर हो। पुरुषोत्तम संगम युगी तख्त है फिर तुम आत्मा को यह देवताई तख्त मिलेंगी। यह बातें दुनिया के मनुष्य नहीं जानते। वह तो है ही जंगली जानवर। कांटों का जंगल है ना। देह-अभिमान में आने से एक दो को दुःख देते हैं। इसलिये इनको दुःखधाम कहा जाता है। अभी बाप बच्चों को समझाते हैं शान्तिधा को याद करो। जो तुम्हारा असली निवास स्थान है। सुखधाम को याद करो। इनको भूलते जाओ। इन से वैराग्य।